Impact Factor : 3.963 (IIJF) UGC NO.46953
Registration No. 1803/2008 ISSN :- 2319-6297

The Original Source

Journal for All Research

An Interdisciplinary Research Peer Reviewed Journal

Editor in Chief
Prof. (Dr.) Ashok Kumar Singh

Editor
Dr. Rajeev Kumar Srivastav
Dr. B.K. Srivastav

Founder
Late Prof. S.N. Sinha
Eminent Historian & Former HOD
Dept. of History
Jammia Millia Islamia, New Delhi

Volume 6 **No. -19** **(April 2018)**

Published by
Centre for Historical and Cultural Studies & Research
Varanasi (U.P.) India

CONTENT

13.	जौनपुर **जनपद पर** विमुद्रीकरण **का** सामाजिक आर्थिक प्रभाव **चन्दन सोनकर 2 डा० शैलेन्द्र कुमार उपाध्याय 3 डा० सत्य प्रकाश सिंह**	....	**41-47**
14.	**Familial Crisis in *Waiting For Lefty* and *Awake and Sing*** Dr. G. D. Dubey	....	**48-50**
15.	**कथक नृत्य** के घराने : **एक** विहंगम दृष्टि **डॉ0 दीप्ति सिंह**	....	**51-58**

कथक नृत्य के घराने : एक विहंगम दृष्टि

डॉ0 दीप्ति सिंह*

'ब्रह्म महापुराण' में अभिनेता, गायक तथा नर्तकों के लिए 'कथक' शब्द प्रयुक्त किया गया है। 'महाभारत' तथा 'नाट्यशास्त्र' में भी 'कथक' शब्द मिलता है। पाली शब्दकोश में 'कथको' शब्द मिलता है, जो एक उपदेशक के लिए प्रयुक्त किया जाता है। नेपाली शब्दकोश में 'कथिको' को कथक नाम से प्रयुक्त किया गया है, जिसका अर्थ है वर्णन करनेवाला अथवा व्याख्याता। कल्प–सूत्रादि जैन–ग्रंथों में कथक की बजाए 'कहुब' शब्द का उल्लेख मिलता है।

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में नृत्य करती हुई स्त्रियों की जो मूर्तियाँ प्राप्त हुई थीं, उनमें उनकी मुद्राओं से पता लगता है कि वे कथक नृत्य कर रही हैं।

'नाट्यशास्त्र' के बाद शाङ्गदेव का 'संगीत– रत्नाकर' ही एक ऐसा ग्रंथ है, जो 'नाट्यशास्त्र' को प्रतिपादित करने वाला संगीत का एक प्रामाणिक ग्रंथ है। यह ग्रंथ तेरहवीं शताब्दी का लिखा हुआ है। इसके नृत्याध्याय में 'कथक' शब्द का उल्लेख किया गया है '–

कथका बंदिनश्चात्र विद्यावंतः प्रियंवदाः ।

प्रशंसाकुशलाश्चान्ये चतुराः सर्वमातुषु ।।

कत्थक या कथक का अर्थ है 'कथा कहने–वाला'। प्राचीन काल में कथावाचकों द्वारा मंदिरों में पौराणिक कथाएँ हुआ करती थीं। कथा के बाद जब कीर्तन होता था, तो उसमें भरत या नट लोग नृत्य करते थे। बाद में इन भरत या नट जाति के लोगों में कुछ दूषित तत्त्व आ गए, जिनके कारण उनका सामाजिक बहिष्कार हो गया। इसके बाद इन नटों ने स्वयं कथा कह–कहकर नृत्य करना प्रारंभ कर दिया, ताकि उनकी जीविका चलती रहे। ब्राह्मण जाति के लोगों की संख्या नटों में अधिक थी, अतएव यही लोग कथक या कत्थक कहलाने लगे। आचार्यों द्वारा नृत्य के शास्त्रीय सिद्धांतों से परिचित होकर ये समाज में भगवान कृष्ण की लीलाओं का नृत्य–प्रधान नाटक या स्वाँग किया करते थे। समुदाय से इनको यश और धन, दोनों ही पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते थे।

भारत में मुसलमानी राज्य स्थापित हुआ। भारत की विद्या, कला तथा संस्कृति को नष्ट करने की चेष्टा की गई। ईश्वर–उपासना की भारतीय कला मनोरंजन के लिए प्रयोग की जाने लगी। दक्षिण के मंदिरों में भगवान् के समक्ष जो देवदासियाँ नृत्य करती थीं, उन्हें बादशाह के हुजूर में पेश किया गया। बड़े–बड़े नृत्याचार्यों को उनकी शिक्षा लिए महल में नौकरी दी गई। शराब का प्याला लेकर नर्तकी को नाचने की आज्ञा दी जाती थी, इसलिए पैरों के द्वारा शरीर का संतुलन रखते हुए नृत्य करना पड़ता था। शराब फैलने पर कोड़ो की

* रा0म0स्ना0महा0, गाजीपुर

 ISSN : 2319-6297/Vol.4/Issue-19

में भूरे खाँ उर्फ आशिकहुसैन और भूरे खाँ की शिष्य–परंपरा में हजारीलाल तथा प्रसिद्ध नर्तकी तारा चौधरी ने कथक नृत्य के क्षेत्र में पर्याप्त यश प्राप्त किया।

जानकीप्रसाद के घराने में प्रमुख विशेषता यह रही है कि नृत्य के साथ केवल नृत्य के बोल ही प्रयुक्त किए जाते हैं, तबला और पखावज के नहीं। तैयारी को छोड़कर स्पष्टता, सौंदर्य और लालित्य की ओर इस घराने का विशेष झुकाव रहता है। गति, मुद्रा और अंग में भी लखनऊ तथा जयपुर–घराने से बनारस–घराने की पृथकता स्पष्ट झलकती है। इस प्रकार कथक नृत्य के घरानों पर विहंगम दृष्टि डाली गई।